वसंत पंचमी

वर्ष -1/अंक -8/ फरवरी -2022

भारतीय परम्परा

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

www.bhartiyaparampara.com

भारतीय परम्परा

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष -1/अंक-8 / फरवरी -2022

प्रकाशन स्थल	संपादक	डिजाइनिंग टीम
मुम्बई	प्रीति माहेश्वरी	MX CREATIVITY

For Private Circulation Only

सोशल कनेक्शन

हमसे जुडने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

www.bhartiyaparampara.com

paramparabhartiya@gmail.com

मूल्य

आपका कीमती समय

फरवरी माह

साका कैलेण्डर - 1943 विक्रम संवत - 2078 अयान - दक्षिणायन ऋतु - शिशिर

सोम		07 माघ शु. सप्तमी, रथ सप्तमी	14 माघ शु. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत	21 फा. कृ. पंचमी	28 फा. कृ. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत
मंगल	01 माघ कृ. अमावस्या, मौनी अमावस्या	08 माघ शु. अष्टमी, भीष्म अष्टमी, दुर्गा अष्टमी	15 माघ शु. चतुर्दशी	22 फा. कृ. षष्ठी, यशोदा जयंती	
बुध	02 माघ शु. प्रतिपदा, गुप्त नवरात्री आरंभ	09 माघ शु. अष्टमी	16 माघ शु. पूर्णिमा, माघ स्नान समाप्त	23 फा. कृ. सप्तमी, शबरी जयंती, कालाष्टमी	
गुरू	03 माघ शु. द्वितीया, फुलेरा दूज	10 माघ शु. नवमी, गुप्त नवरात्री समाप्त	17 फा. कृ. प्रतिपदा	24 फा. कृ. अष्टमी, जानकी जयंती	
शुक्र	04 माघ शु. तृतीया, गोतंरी व्रत	11 माघ शु. दशमी	18 फा. कृ. द्वितीया	25 फा. कृ. नवमी व दशमी	
शनि	05 माघ शु. पंचमी, वसंत पंचमी	12 माघ शु. एकादशी, जया / भीमी एकादशी व्रत	19 फा. कृ. तृतीया	26 फा. कृ. एकादशी, महर्षि दयानंद जयंती विजया एकादशी	
रवि	06 माघ शु. षष्ठी, स्कंध षष्ठी	13 माघ शु. द्वादशी, भीष्म / वराह / तिल द्वादशी	20 फा. कृ. चतुर्थी,संकष्टी चतुर्थी व्रत	27 फा. कृ. द्वादशी	

कृ. - कृष्ण शु. - शुक्ल फा. - फाल्गुन

गुप्त नवरात्री

गुप्त नवरात्रि क्यों मनाते है ?

हिंदू धर्म में नवरात्रि त्यौहार का विशेष महत्व होता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार गुप्त नवरात्रि का भी विशेष महत्व है, जिसे तंत्र-मंत्र को सिद्ध करने वाली मानी गई है। गुप्त नवरात्रि के नौ दिन तक माँ दुर्गा की विधि-विधान से पूजा की जाती है। गुप्त नवरात्रि में सात्विक और तांत्रिक दोनों तरीके से पूजा की जाती है। जिसमे मुख्य रूप से साधुओं, तांत्रिकों द्वारा माँ दुर्गा को प्रसन्न, शक्ति साधना, महाकाल और तंत्र साधना के लिए मनाया जाता है। मान्यता है कि गुप्त नवरात्रि में माँ दुर्गा की पूजा को गुप्त रखा जाता है, इससे पूजा का फल दोगुना मिलता है।

माँ दुर्गा के इन स्वरूपों की होती है पूजा -

गुप्त नवरात्र के दौरान कई साधक दस महाविद्याओं (तंत्र साधना) के पूजन के लिए **माँ कालिके, तारा देवी, त्रिपुर सुंदरी, भुवनेश्वरी, माता छिन्न मस्तिका, त्रिपुर भैरवी, माँ धूमावती, माता बगलामुखी, मातंगी, कमला देवी की पूजा करते हैं। भागवत के अनुसार भगवान शिव के दो रूप होते हैं - एक शिव तथा दूसरा रूद्र उसी प्रकार माँ भगवती के भी दो रूप हैं - एक काली कुल तथा दूसरा श्रीकुल**। काली कुल आक्रामकता का प्रतीक होती हैं और श्रीकुल शालीन होती हैं। काली कुल में महाकाली, तारा, छिन्नमस्तिका और भुवनेश्वरी हैं। यह स्वभाव से उग्र हैं। श्रीकुल की देवियों में महा-त्रिपुर सुंदरी, त्रिपुर भैरवी, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी और कमला माता हैं। धूमावती माता को छोड़कर सभी सौंदर्य की प्रतीक हैं।

माँ काली (कालिके) - दस महाविद्याओं में से अत्यंत शक्तिशाली माँ काली मानी जाती हैं, तंत्र साधना में तांत्रिक और साधक देवी काली के रूप की उपासना किया करते हैं।

माँ तारा - दस महाविद्याओं में से माँ तारा की उपासना तंत्र साधकों के लिए सर्व सिद्धि कारक मानी जाती है। माँ तारा पररूपा एवं महासुन्दरी कला-स्वरूपा हैं तथा यह सबकी मुक्ति का विधान रचती हैं।

माँ त्रिपुर सुंदरी - माँ त्रिपुर सुंदरी समृद्धिदात्री है। दक्षिणमार्गी मठों के अनुसार देवी त्रिपुर सुंदरी को चंडी का स्थान प्राप्त है।

माँ भुवनेश्वरी - माता भुवनेश्वरी को सृष्टि की ऐश्वर्य स्वामिनी माना जाता हैं। माँ भुवनेश्वरी के मंत्र को सभी देवी देवताओं की आराधना में विशेष शक्ति दायी माना जाता है।

माँ छिन्नमस्तिका - **माँ छिन्नमस्तिका को माँ चिंतपूर्णी** के नाम से भी जाना जाता है, माँ की पूजा करने से भक्तों को सभी कष्टों से मुक्ति मिलती है।

माँ त्रिपुर भैरवी - माँ त्रिपुर भैरवी तमोगुण और रजोगुण से परिपूर्ण हैं। इनकी पूजा करने से मनुष्य के मुक्ति के मार्ग खुल जाते है।

माँ धूमावती - माँ धूमावती के पूजन से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। माँ धूमावती का रूप अत्यंत भयावह हैं। माँ ने ये रूप शत्रुओं के संहार के लिए धारण किया था।

माँ बगलामुखी - माँ बगलामुखी स्तंभन की अधिष्ठात्री देवी हैं। इनकी उपासना से शत्रुओं का नाश होता है तथा भक्त का जीवन हर प्रकार की बाधा से मुक्त हो जाता है।

माँ मातंगी - माँ मातंगी वाणी और संगीत की अधिष्ठात्री देवी मानी जाती हैं। इनमें संपूर्ण ब्रह्माण्ड की शक्ति का समावेश हैं। माँ मातंगी अपने भक्तों को अभय फल प्रदान करती हैं।

माँ कमला - माँ कमला सुख संपदा की प्रतीक मानी गयी हैं। जो धन संपदा की अधिष्ठात्री देवी भी है, भौतिक सुख की इच्छा रखने वालों के लिए इनकी आराधना सर्वश्रेष्ठ मानी जाती हैं।

तांत्रिक सिद्धियां पाने के लिए किसी सुनसान जगह पर जाकर दस महाविद्याओं की साधना करें। नवरात्रि तक माता के मंत्र का 108 बार जाप भी करें। यही नहीं सिद्ध कुंजिका स्तोत्र का 18 बार पाठ करें। **ब्रह्म मुहूर्त में श्रीरामरक्षास्तोत्र का पाठ आपको दैहिक, दैविक और भौतिक तापों से मुक्त करता है।**

गुप्त नवरात्रि में प्रयोग में आने वाली सामग्री -

माँ दुर्गा की प्रतिमा या चित्र, सिंदूर, केसर, कपूर, धूप, चुंदरी वस्त्र, दर्पण, कंघी, लाल कंगन-चूड़ी, सुगंधित तेल, बंदनवार (आम के पत्तों का), मेंहदी, बिंदी, सुपारी साबुत, हल्दी की गांठ और पिसी हुई हल्दी, पटरा, आसन, चौकी, रोली, मौली, लाल पुष्प, दूर्वा, पुष्पहार, बेलपत्र, कमलगट्टा, जौ, दीपक, दीपबत्ती, नैवेद्य, मधु, शक्कर, पान, पंचमेवा, जायफल, जावित्री, नारियल, मिट्टी, लौंग, इलायची, कलश (मिट्टी, तांबे या पीतल का), हवन सामग्री, पूजन के लिए थाली, श्वेत वस्त्र (पाटे के लिए), घी, तेल, रुई, दूध, दही, ऋतु फल, सरसों (सफेद और पीली), गंगाजल इत्यादि।

माँ दुर्गा की गुप्त नवरात्रि में ऐसे करें पूजा -

माना जाता हैं कि गुप्त नवरात्रि के दौरान तांत्रिक और अघोरी माँ दुर्गा की आधी रात में पूजा करते हैं। माँ दुर्गा की प्रतिमा या मूर्ति स्थापित कर लाल रंग का सिंदूर और सुनहरे गोटे वाली चुनरी अर्पित की जाती है। इसके बाद माता के चरणों में पूजा सामग्री को अर्पित किया जाता है। माँ दुर्गा को लाल पुष्प चढ़ाना शुभ माना जाता है। सरसों के तेल से दीपक जलाकर **'ॐ दुं दुर्गायै नमः'** मंत्र का जाप करना चाहिए।

कहा जाता है कि गुप्त नवरात्रि में की जाने वाली पूजा से कई कष्टों से मुक्ति मिलती है। माँ दुर्गा की कृपा पाने के लिए गुप्त नवरात्रि के नौ दिन कुछ व्रत नियमों का पालन करना अनिवार्य होता है।

अगर आप अपने

‘शब्दों के मोती’

‘भारतीय परम्परा
की माला में पिरोना’

चाहते है तो हमें

सम्पर्क करें!

paramparabhartiya@gmail.com

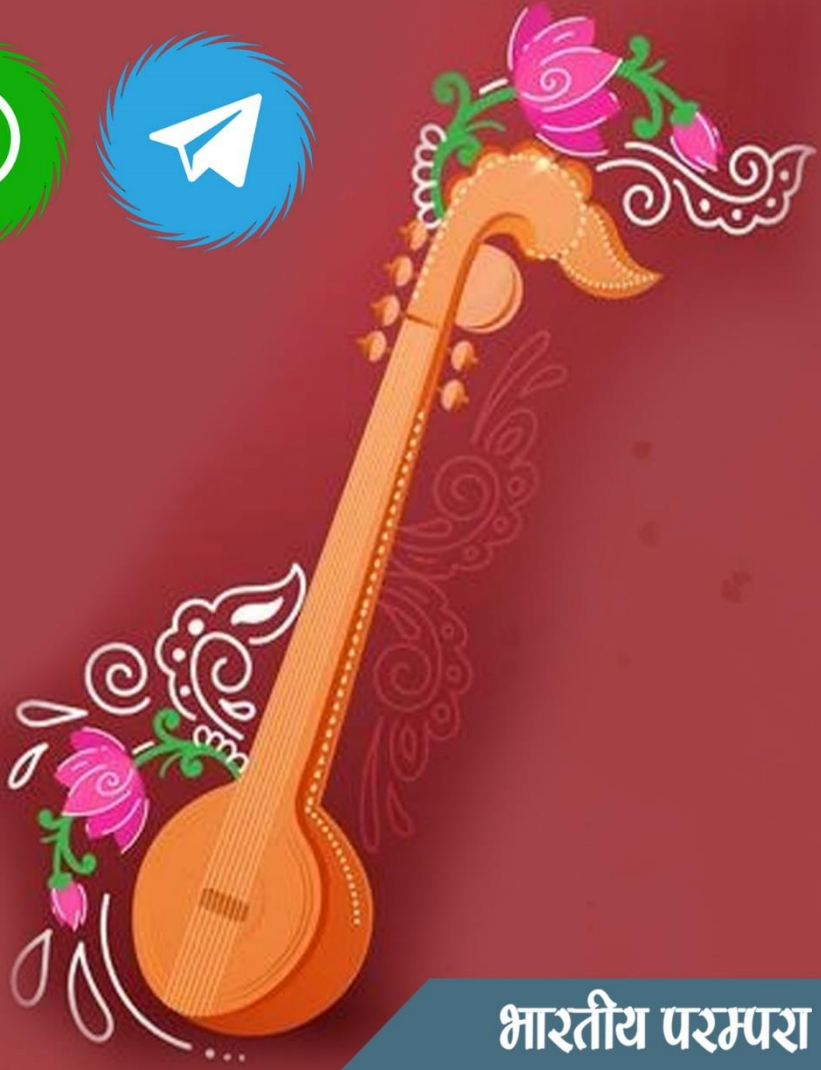

विद्या की देवी सरस्वती के जन्मदिवस के रूप में बसंत पंचमी का त्यौहार मनाया जाता है जो बसंत ऋतु के आगमन का भी प्रतीक है। प्राचीन भारत में पूरे साल को जिन छह मौसमों में बाँटा गया है, उनमें बसंत ऋतु सभी लोगों का मनचाहा मौसम है। इस मौसम में फूलों पर बहार आती है, खेतों में सरसों का फूल जैसे सोना चमकने लगता है, जौ और गेहूँ की बालियाँ खिलने लगतीं है, आमों के पेड़ों पर मांजर आ जाता और हर तरफ़ रंग-बिरंगी तितलियाँ और भंवरे मंडराने लगते है।

बसंत ऋतु का स्वागत करने के लिए माघ महीने के पांचवे दिन बसंत पंचमी या श्रीपंचमी का त्यौहार मनाया जाता है। इस दिन ज्ञान और स्वर की देवी माता सरस्वती की पूजा की जाती है। कुछ जगहों पर वसंत पंचमी के दिन विष्णु और कामदेव की पूजा भी होती हैं। यह त्यौहार पूर्वी भारत, पश्चिमोत्तर बांग्लादेश, नेपाल और कई राष्ट्रों में बड़े उल्लास से मनाया जाता है।

इस समय को पूर्वाह्न भी कहा जाता है। शिक्षा प्रारंभ करने या किसी नई कला की शुरुआत करने के लिए आज का दिन शुभ माना जाता है। पीला रंग समृद्धि का सूचक है इसलिए आज के दिन पीले रंग के वस्त्र पहनकर पूजा की जाती है।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार **आज के दिन देवी रति और भगवान कामदेव की षोडशोपचार पूजा करने का भी विधान है।** यह भी माना जाता है कि **बसंत पंचमी के दिन ही सिख गुरु गोविंद सिंह का जन्म हुआ था।**

बसंत पंचमी का महत्व -

इस पर्व के महत्व का वर्णन पुराणों और अनेक धार्मिक ग्रंथों में विस्तार पूर्वक किया गया है। खासतौर से देवी भागवत में उल्लेख मिलता है कि माघ शुक्ल पक्ष की पंचमी को ही संगीत, काव्य, कला, शिल्प, रस, छंद, शब्द आदि की शक्ति जिह्वा को प्राप्त हुई थी।

बसंत पंचमी का मुहूर्त शास्त्र के अनुसार एक स्वयंसिद्ध मुहूर्त और अबूझ मुहूर्त भी माना गया है अर्थात इस दिन कोई भी शुभ मंगल कार्य करने के लिए पंचांग शुद्धि की आवश्यकता नहीं होती। ज्योतिषविदों के अनुसार, इस दिन नींव पूजन, गृह प्रवेश, वाहन खरीदना, व्यापार आरम्भ करना, सगाई और विवाह आदि मंगल कार्य किए जा सकते हैं। विद्यार्थी इस दिन अपनी किताब कॉपी और पढ़ने वाली वस्तुओं की पूजा करते हैं। इसी दिन शिशुओं को पहला अक्षर लिखना सिखाया जाता है। विद्या का आरंभ करने के लिए ये दिन सबसे शुभ माना गया है।

बसंत पंचमी कथा -

पौराणिक कथाओं के अनुसार माघ मास की शुक्ल पक्ष की पंचमी को मनाए जाने वाले इस त्यौहार के दिन ही ब्रह्माण्ड के रचयिता ब्रह्माजी ने सरस्वती की रचना की थी। जिसके बारे में पुराणों में यह उल्लेख मिलता है कि सृष्टि के प्रारंभिक काल में ब्रह्माजी ने मनुष्य योनि की रचना की पर अपने प्रारंभिक अवस्था में मनुष्य मूक था और धरती बिलकुल शांत थी। ब्रह्मा जी ने जब संसार को बनाया तो पेड़-पौधों और जीव जन्तुओं सबकुछ दिख रहा था, लेकिन अपनी सर्जना से वे संतुष्ट नहीं थे, उन्हें लगता था कि कुछ कमी रह गई है जिसके कारण चारों ओर मौन छाया रहता है। तब ब्रह्मा जी ने इस समस्या के निवारण के लिए अपने कमंडल से जल अपने हथेली में लेकर संकल्प स्वरूप उस जल को छिड़क कर भगवान श्री विष्णु की स्तुति की और भगवान विष्णु तत्काल ही उनके सम्मुख प्रकट हो गए।

उनकी समस्या सुनकर भगवान श्री विष्णु ने आदिशक्ति देवी दुर्गा का आव्हान किया। विष्णु जी के द्वारा आव्हान होने के कारण माँ भगवती दुर्गा वहां तुरंत ही प्रकट हो गयीं तब ब्रह्मा जी एवं विष्णु जी ने उन्हें इस संकट को दूर करने का निवेदन किया। समस्या सुनने के बाद उसी क्षण आदिशक्ति दुर्गा माता के शरीर से श्वेत रंग का एक तेज उत्पन्न हुआ जिसमें अद्भुत शक्ति के रूप में एक चतुर्भुजी देवी प्रकट हुईं। उनके एक हाथ में वीणा और दूसरे हाथ में पुस्तक थी, तीसरे में माला और चौथा हाथ वर मुद्रा में था। **बसंत पंचमी के दिन आदिशक्ति श्री दुर्गा के शरीर से उत्पन्न तेज से इस स्वरूप में देवी सरस्वती प्रकट हुई थी।** प्रकट होते ही देवी ने वीणा का मधुरनाद किया जिससे संसार के समस्त जीव-जन्तुओं को वाणी प्राप्त हो गई। जलधारा में कोलाहल व्याप्त हो गया। पवन चलने से सरसराहट होने लगी। तब सभी देवताओं ने शब्द और रस का संचार कर देने वाली उन देवी को वाणी की अधिष्ठात्री देवी **"सरस्वती"** कहा।

तब आदिशक्ति माँ भगवती ने ब्रह्मा जी से निवेदन किया कि मेरे तेज से उत्पन्न हुई ये देवी सरस्वती आपकी पत्नी बनेंगी, जैसे लक्ष्मी श्री विष्णु की शक्ति है, पार्वती महादेव शिव की शक्ति हैं उसी प्रकार ये सरस्वती देवी ही आपकी शक्ति होंगी। **माँ सरस्वती को बागेश्वरी, शारदा, वीणा वादिनी और वाग्देवी सहित अनेक नामों से पूजा जाता है।** ये विद्या और बुद्धि प्रदाता हैं। संगीत की उत्पत्ति करने के कारण ये संगीत की देवी भी मानी जाती हैं।

बसंत पंचमी की पूजा विधि -

- बसंत पंचमी की पूजा सूर्योदय के ढाई घंटे बाद या सूर्यास्त के ढाई घंटे बाद ही की जाती है। सुबह के समय स्नान आदि करके पीले या सफेद वस्त्र धारण करें, पूजा पूर्व या उत्तर दिशा की तरफ मुख करके करनी चाहिए।
- पूजा के लिए एक चौकी लें, उसपर गंगाजल छिड़क कर पीला या सफेद रंग का वस्त्र बिछा दें फिर सफेद कमल पर बैठी वीणा धारणी माँ सरस्वती की प्रतिमा या तस्वीर स्थापित करें। पूजा के स्थान पर वाद्य यंत्र, किताबें रखें और बच्चों को भी पूजा स्थल पर बैठाएं।
- माता सरस्वती को हल्दी अथवा सफेद चंदन अर्पित करें। इसके पश्चात माता को सिन्दूर व अन्य श्रृंगार की सामग्री चढ़ाएं। इसके बाद माँ सरस्वती के चरणों में पीले और सफेद फूल अर्पित करें।
- माँ सरस्वती का पूजन करने के बाद पुस्तकों और वाद्य यंत्रों की भी अवश्य पूजा करें।
- पूजा में सरस्वती कवच का पाठ करें और **'श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा'** मंत्र का 108 बार जाप करें।

- इसके बाद अंत में माँ सरस्वती की धूप व दीप से आरती उतारें और पूजा में हुई किसी भी भूल के लिए क्षमा मांगे।
- माता को पीले चावल, केसर मिश्रित खीर या पीले रंग के प्रसाद का भोग लगाएं। भोग लगाकर सभी को प्रसाद बांटे और स्वयं भी प्रसाद ग्रहण करें।
- कुछ जगहों पर बसंत पंचमी के दिन माँ की मूर्ति का विसर्जन करने की भी परंपरा है। यदि आप भी ऐसा करते हैं तो माता सरस्वती की मूर्ति के साथ उनका सारा सामान जो पूजा में चढ़ाया है वो भी प्रवाहित करें।

सरस्वती पूजा मंत्र -1

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता।
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना॥
या ब्रह्माच्युत शंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता।
सा माम् पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥1॥
शुक्लां ब्रह्मविचार सार परमाम् आद्यां जगद्व्यापिनीम्।
वीणा-पुस्तक-धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्॥
हस्ते स्फटिकमालिकाम् विदधतीम् पद्मासने संस्थिताम्।
वन्दे ताम् परमेश्वरीम् भगवतीम् बुद्धिप्रदाम् शारदाम्॥2॥

सरस्वती पूजा मंत्र -2

सरस्वती नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणी,
विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा।

यदि बसंत पंचमी के दिन पति-पत्नी भगवान कामदेव और देवी रति की पूजा षोडशोपचार करते हैं तो उनकी वैवाहिक जीवन में अपार ख़ुशियाँ आती हैं और उनके रिश्ते मजबूत होते हैं।

षोडशोपचार पूजन संकल्प -

ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः, अद्य ब्राह्मणो वयसः परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे,
अमुक नाम संवत्सर माघ शुक्ल पञ्चम्यां अमुक वासरे अमुक गोत्र अमुक नामाहं सकल पाप - क्षय पूर्वक - श्रुति - स्मृत्युक्ताखिल - पुण्यफलोपलब्धये सौभाग्य - सुस्वास्थ्यलाभाय अविहित - काम - रति - प्रवृत्तिरोधाय मम
पत्यौ/पत्न्यां आजीवन - नवनव अनुरागाय रति - कामदम्पती षोडशोपचारैः पूजयिष्ये।

देवी रति और कामदेव का ध्यान -

ॐ वारणे मदनं बाण - पाशांकुशशरासनान्।
धारयन्तं जपारक्तं ध्यायेद्रक्त - विभूषणम्।।
सव्येन पतिमाश्लिष्य वामेनोत्पल - धारिणीम्।
पाणिना रमणांकस्थां रतिं सम्यग् विचिन्तयेत्।।

श्री पंचमी -

आज के दिन धन की देवी **'लक्ष्मी'** (जिन्हें श्री भी कहते है) और भगवान विष्णु की भी पूजा की जाती है। कुछ लोग देवी लक्ष्मी और देवी सरस्वती की पूजा एक साथ ही करते हैं। सामान्यतः कारोबारी या व्यवसायी वर्ग के लोग देवी लक्ष्मी की पूजा करते हैं। लक्ष्मी जी की पूजा के साथ श्री सूक्त का पाठ करना अत्यंत लाभकारी माना गया है।

बसंत ऋतु की शुरुआत का मधुर आगाज,

जब सज जाती है, माँ सरस्वती के स्वागत में पीले मनमोहक फूलों से
ख़ुद पूरी धरती और सुनहरी किरणों से चमकता हुआ आकाश,

आज चारों तरफ़ फैला हुआ है बीमारी का डर,
विद्या और ज्ञान की देवी से कहना है यहीं,
खुले रहने दो बच्चों के लिए स्कूल, कॉलेज ताकि हो पाए उनका रुका हुआ सम्पूर्ण विकास,

पिछले दो वर्ष से पढ़ाई का हुआ है सबसे ज़्यादा नुक़सान,
हे माँ सभी की प्रार्थना को करो स्वीकार, कैसे होगा बच्चों के भविष्य का सुधार,

आओ करें स्वास्थ्य की सुरक्षा से संबंधित सभी नियमों का पूरी तरह पालन, यही है अपने जग को बचाने और बढ़ाने का बेहतर उपाय।

- बबीता पोद्दार जी

Kings Weds Queens

Wedding Celebrations

Wedding Logo
Wedding theme
Wedding Website
Wedding Invitation

wwww.kingswedsqueens.com

हँसी खुशी के पल

हाथी घोडा पालकी
जय कोरोना लाल की,
ऐसी-तैसी कर दी
तूने पूरे साल की।

जीभ में एक भी हड्डी
नहीं होती फिर भी

इंसान की हड्डियां तुडवाने
की 'ताकत' रखती है।

आप भी गर्दन उठाकर इस
दुनिया में जी सकते हो..
बस एक दिन
अपना मोबाइल
घर पर ही भूल जायो !!

अध्यापक - शाबाश, तुमहारे
इतने अच्छे अंक आये, आगे
भी ऐसे ही अंक लाना।
छात्र - अच्छा सर, पर आप
भी परचे पापा के प्रेस से ही
छपवाते रहना।
- चिंतित अध्यापक

मैने एक फिरंग से पूछा
आप खाने में क्या लेते है?
फिरंग - सलाद

मैं - ये तो हम खाने के
इंतजार में ही निपटा देते है।

जो बुखार में भी काम करे
वो होता है.. 'व्यापारी'
और जिसे काम देखकर
बुखार आए वो है..
'सरकारी कर्मचारी'

लघुकथा - सच्चे मित्र

रवि अपने बच्चे शीनू से बहुत परेशान रहता था। जब से कोरोना आया है तबसे सभी बच्चे ऑनलाइन पढ़ रहे थे। शीनू को भी ऑनलाइन पढ़ना था परंतु घर पर एक ही स्मार्ट फोन था। रवि को अपने ऑफिस का सारा काम इसी स्मार्ट फ़ोन से करना पड़ता था। अतः एक और स्मार्ट फ़ोन की तत्काल जरूरत थी। रवि को कोरोना काल के पहले वेतन 30,000 मिलता था परंतु कोरोना के कारण उसका वेतन कम होकर 25000 रुपये ही रह गया था। इस वेतन से घर का खर्च चलाना मुश्किल हो रहा था। ऐसे में फिर दूसरे मोबाइल की व्यवस्था कैसे की जाए? इसी उधेड़बुन में वह रहता था। उधर फीस जमा करने के बाबजूद भी शीनू की पढ़ाई शुरू नहीं हो पा रही थी। शीनू भी दुखी हो रहा था। उसके सभी दोस्तों की ऑनलाइन पढ़ाई शुरू हो चुकी थी।

रवि ने अपनी समस्या अपने मित्र गिरधर को कह सुनाई। गिरधर भी एक फैक्टरी में काम करता था। वह रवि की मदद करना चाहता था परंतु कोरोना की वजह से उसकी फैक्टरी में ताला लग चुका था। अब तो वह जमा की गई पूंजी से ही अपना घर खर्च चला रहा था। वह चाहकर भी रवि की मदद नहीं कर पा रहा था।

उसने रवि से कहा, "मेरा एक मित्र दौलत राम एक मोबाइल की दुकान में काम करता है वह ही कुछ कर सकता है। फिर क्या अगले दिन दोनों दौलत राम के पास जा पहुंचे और अपनी परेशानी बताई।"
दौलत राम ने अपने सेठ से कहा, "सेठ जी इनके बच्चे को पढ़ने के लिए

मोबाइल फोन की जरूरत है। आप कृपा करें तो एक स्मार्ट फ़ोन इनको उधार दे दें। मैं गारंटी लेता हूँ कि मोबाइल का पूरा पैसा लौटा देंगें।"
सेठ बोला, देखो! कोरोना के कारण वैसे ही काफी मंदी चल रही है। मैं तुमको तनख्वाह ही बड़ी मुश्किल से दे पा रहा हूँ। अगर ऐसे में मैं उधार देता रहूँगा तो मैं तुमको तनख्वाह भी समय पर नहीं दे पाऊंगा।

रवि बोला, सेठ जी मुझे किस्तों पर मोबाइल दे दीजिए। किस्तों में आपको भी फायदा होगा।
सेठ बोला, किस्तों पर मोबाइल उसी को दिया जाता है जिससे समय पर किस्त आने की गारंटी हो। कोरोना के कारण बड़ी बड़ी दुकाने फैक्टरियाँ सब बंद होती जा रहीं है तुम्हारी नौकरी भी चली गयी तो किस्तें कौन भरेगा।

"मैं भरूँगा" दौलत राम बोला। सेठ ने कहा अरे भाई दौलत राम इसकी कोई गारंटी नही है कि तुम्हारी नौकरी भी बची रहेगी। अगर कोरोना इसी तरह फैलता रहा तो मुझे भी दुकान बंद करनी पड़ सकती है। अब तो कोई चारा नजर नहीं आ रहा था। दोनों मित्र दुखी होकर घर आ गए। रवि ने शीनू का नाम कटाने का निश्चय कर लिया था। इस महीने की फीस वह जमा कर चुका था। उसने सोचा कि इस महीने के अंत में शीनू का नाम स्कूल से कटवा देगा। आखिर वह दिन भी आ गया। वह जैसे ही अपने बच्चे शीनू का नाम कटवाने के लिए घर से बाहर निकले ही थे कि देखा गिरधर और दौलतराम सबने हाथ में मोबाइल का एक डब्बा हाथ में लिए हुए चले आ रहे थे। पास आकर मोबाइल फ़ोन रवि को देते हुए कहा, **"रवि भाई जिसका हृदय साफ होता है उसकी मदद भगवान करता है।"**

रवि ने पूछा, "यह सब कैसे संभव हुआ?" दौलत राम ने कहा, अरे भाई! सरकार ने छोटे और मझोले किसानों के खातों में 2500 - 2500 रुपये भेजे है सो मेरे और गिरधर के खाते ने पैसे आ गये और सेठ जी ने भी 2000 रुपये तुम्हारी अपने बच्चे को पढ़ाने की ललक को देख कर उधार दे दिए है।

मोबाइल पाकर शीनू की खुशी का ठिकाना न रहा। फिर क्या शीनू की ऑनलाइन पढ़ाई शुरू हो चुकी थी। शीनू ने दिन रात मेहनत करके अपना होमवर्क पूरा कर लिया और परीक्षा में दूसरा स्थान प्राप्त किया। रिजल्ट पाकर रवि खुशी से झूम पड़ा। धीरे धीरे रवि ने गिरधर, दौलतराम और दुकानदार का कर्जा भी उतार दिया।

- डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव जी

भारतीय परम्परा
की मासिक ई-पत्रिका

नियमित प्राप्त करने हेतु हमें

सम्पर्क करें!

- व्हाट्सप्प और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरू में नया अंक प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें।

- ई-पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुवे है उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुँच सकते है।

- ई-पत्रिका में कुछ त्रुटियाँ हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें।

- **भारतीय परम्पराओं** को संजोये रखने एवं ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों और विचारों से अवगत जरूर कराये।

जीवन एक संसार

मकडी भी नहीं उलझती
अपने बनाये जाल में,
जितना एक मनुष्य उलझ
जाता है, अपने ही
बनाए ख्याल में।

ज्ञानी होने से
शब्द समझ में आने
लगते है, और
अनुभव होने से अर्थ

उम्र बढने से मुस्कुराहट
नहीं रूकती, लेकिन
मुस्कुराहट रूकने से
उम्र जल्दी बढती हैं।

दुनिया में झूठे लोगो को
बडे हुनर आते है,
सच्चे लोग तो इल्जाम से
ही मर जाते है।

पैर को लगने वाली
चोट संभल के चलना
सिखाती है,
और मन को लगने
वाली चोट समझदारी से
चलना सिखाती है।

संबंधों की गहराई का हुनर
पेडों से सीखना चाहिए,
जडों में चोट लगते ही
शाखें सूख जाती है।

पारंपरिक व्यंजन

पास्ता

पूनम राठी जी

सामग्री –

1 कप पास्ता, 2 कप पानी, 1 कप दूध, 1/4 कप चीज़ कद्दूकस किया हुआ, 1 टी स्पून मैदा, 1 टी स्पून काली मिर्च, 2 टी स्पून तेल, 2 टी स्पून मक्खन, 1 शिमला मिर्च, नमक स्वादानुसार

विधि –

- चीज़ पास्ता बनाने के लिए सबसे पहले एक बर्तन में पानी ले और उसे गैस पर उबलने के लिए रख दे। पानी मे थोडा सा नमक और तेल डालकर मिला दे। जब पानी में उबाल आ जाए तो उसमे पास्ता डाले और अच्छे से मिलाए।

- पास्ता को चलाते रहे जब तक वो अच्छे से पक ना जाए। कुछ देर में आपका पास्ता पक कर नरम हो जाएगा। गैस को बंद कर दे अब छलनी की मदद से अपने पास्ता को छान ले और ठंडा होने के लिए रख दे।

- अब शिमला मिर्च को ले उसके बीज निकाल दे और लम्बे आकार में बारीक़ काट ले। एक पैन में मक्खन डालकर गरम करे इसमें कटी हुई शिमला मिर्च डाले और धीमी आंच पर उसे भूने। कुछ देर में आपकी शिमला मिर्च क्रिस्पी हो जाएगी। इन्हे प्लेट में निकाल ले।

- मक्खन में मैदा डाले और उसका रंग बदलने तक उसे भूने। भुनी हुई मैदा में दूध डाले और चलाए। दोनों को अच्छे से मिलाए ताकि उसमे गुठली ना बने। कुछ देर पकने के बाद इसमें चीज़ डाले, आपकी व्हाइट सॉस बनकर तैयार है।

- इसमें नमक, काली मिर्च, उबला हुआ पास्ता और शिमला मिर्च डालकर अच्छे से मिलाए।

- कुछ देर पकने के लिए छोड़ दे। 2-3 मिनट के बाद आपका स्वादिष्ट चीज़ पास्ता बनकर तैयार है इसे प्लेट में निकाले और सभी को सर्वे करे।

जया/भीमी एकादशी व्रत

जया एकादशी का महत्व –

माघ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि को जया एकादशी के नाम से जाना जाता है जया एकादशी के दिन व्रत रखने से एवं भगवान विष्णु की पूजा करने से व्यक्ति को मोक्ष की प्राप्ति होती है। मृत्यु के उपरांत स्वर्ग की प्राप्ति के लिए जया एकादशी का व्रत एवं जया एकादशी व्रत कथा का पाठ जरूर करना चाहिए। मनुष्य के द्वारा जीवन काल में अनेक पाप हो जाते हैं तथा उन्हीं पापों की सजा से मुक्ति प्राप्त करने के लिए जया एकादशी का व्रत किया जाता है। इस व्रत को करने से हर तरह के पाप यहां तक की हत्या जैसे दोष से भी मुक्ति प्राप्त हो जाती है। इस प्रकार प्रेत योनि से मुक्ति पाकर स्वर्ग की प्राप्ति की कामना से भी इस व्रत को किया जाता है। जया एकादशी को दक्षिण भारत के कर्नाटक और आंध्र प्रदेश के कुछ राज्यों में **'भूमि एकादशी'** या **'भीष्म एकादशी'** के रूप में भी जाना जाता है।

जया एकादशी की व्रत कथा –

एक बार नंदन वन में उत्सव रखा गया जिसमें सभी देवता एवं ऋषि मुनि उपस्थित थे। चारों तरफ किसी उत्साह एवं प्रसन्नता का माहौल था। गांधर्व गीत गा रहे थे और गंधर्व कन्याएं नृत्य कर रही थीं। वहीं पुष्पवती नामक गंधर्व कन्या ने माल्यवान नामक गंधर्व को देखा और उस पर आसक्त होकर अपने हाव-भाव से उसे रिझाने का प्रयास

करने लगी। माल्यवान भी उस गंधर्व कन्या पर मुग्ध हो गया और वह भी अपने गायन का सुर-ताल भूल गया। इससे संगीत की लय टूट गई और समारोह का सारा आनंद बिगड़ गया। सभा में उपस्थित देवगणों को यह बहुत बुरा लगा। यह देखकर देव इंद्र भी क्रोधित हुए। संगीत एक पवित्र साधना है। इस साधना को भ्रष्ट करना पाप है, अतः क्रोधवश इंद्र ने पुष्पवती तथा माल्यवान को श्राप दे दिया - कि उन्हें मृत्युलोक में जाना होगा। उन्होंने पुष्पवती एवं माल्यवान को कहा कि गुरुजनों की सभा में इस प्रकार से असंयमित प्रदर्शन करके तुमने गुरुजनों का भी अपमान किया है, इसलिए इंद्रलोक में तुम्हारा रहना अब वर्जित है, अब तुम प्रेत योनि में जाकर असंयमी जीवन व्यतीत करना होगा।

इस प्रकार के श्राप को सुनकर वे अत्यंत दुखी हुए और हिमालय पर्वत पर प्रेत योनि में कष्ट सहित जीवन यापन करने लगे। उन्हें गंध, रस, स्पर्श आदि का तनिक भी बोध नहीं था। रात-दिन में उन्हें एक क्षण के लिए भी नींद नहीं आती थी। उस स्थान का वातावरण जीवन के अनुकूल नहीं था, ठंड होने के कारण वे बहुत कष्ट पाते थे। उन्हें भोजन भी सरलता से प्राप्त नहीं हो पाता था। इस तरह वे अत्यधिक कष्ट पूर्ण जीवन बिताने लगे।

श्री हरी की कृपा से एक बार माघ के शुक्ल पक्ष की जया एकादशी के दिन इन दोनों ने कुछ भी भोजन नहीं किया और न ही कोई अधर्म किया। उस दिन मात्र फल-फूल खाकर ही दिन व्यतीत किया और अत्यधिक कष्ट के साथ पीपल के वृक्ष के नीचे विश्राम करने लगे। उस दिन सूर्य भगवान अस्तांचल को जा रहे थे तो रात भी कठिनता से काटी। इस प्रकार अनजाने में ही दोनों से जया एकादशी का व्रत पूर्ण हो गया। दूसरे दिन प्रातः काल होते ही प्रभु की कृपा से दोनों को प्रेत योनि से मुक्ति मिल गई और पुनः वे अत्यंत सुंदर अप्सरा और गंधर्व की देह प्राप्त करके तथा सुंदर वस्त्रों तथा आभूषणों से अलंकृत होकर स्वर्ग लोक को चले गए। उस समय आकाश में देवताओं ने भी उन पर पुष्पों की वर्षा की। स्वर्ग लोक में जाकर इन दोनों ने देव इंद्र को प्रणाम किया।

उन्हें उनके पूर्व रूप में देखकर इंद्र को भी बहुत आश्चर्य हुआ और उन्होंने पूछा- तुम्हें प्रेत योनि से किस प्रकार मुक्ति मिली, उसका पूरा वृत्तांत मुझे बताओ। देवेंद्र की बात सुन माल्यवान ने कहा - हे देवताओं के राजा इंद्र! **श्रीहरि की कृपा तथा जया एकादशी के व्रत के पुण्य से हमें प्रेत योनि से मुक्ति मिली है।** इंद्र ने कहा - हे माल्यवान! एकादशी व्रत करने से तथा भगवान श्रीहरि की कृपा से तुम दोनों प्रेत योनि से मुक्त होकर पवित्र हो गए हो तथा इसलिए हम देवताओं के लिए भी वंदनीय हो गए हो, क्योंकि शिव तथा विष्णु-भक्त हम देवताओं के लिए भी वंदना करने

योग्य हैं, अब आप प्रसन्नतापूर्वक देवलोक में निवास कर सकते हैं। इस प्रकार जया एकादशी के उपवास से प्रेत योनि से सहज ही मुक्ति मिल जाती है। जो मनुष्य इस एकादशी का व्रत कर लेता है, उसने मानो सभी तप, यज्ञ, दान कर लिए हैं एवं इसी के परिणाम से उसे मृत्यु के उपरांत स्वर्ग में स्थान मिलता है।

जया एकादशी का व्रत कैसे करें -

अन्य एकादशी की तरह इस व्रत को भी निर्जल एवं फलाहारी दोनों ही प्रकार से रख सकते हैं परंतु निर्जला व्रत रखना बहुत कठिन होता है इसलिए साधारणतया एकादशी के व्रत के दिन फलाहारी व्रत रखा जाता है जिसमें दिन में एक बार फलाहार व जल ग्रहण किया जाता है। जो व्यक्ति एकादशी का व्रत नहीं रख सकते हैं उन्हें इस दिन सात्विक भोजन का सेवन ही करना चाहिए। एकादशी के दिन चावल का प्रयोग वर्जित है इसलिए इस दिन घर में चावल नहीं पकाए जाते हैं। हिंदू धर्म में इस व्रत का बहुत महत्व है एकादशी व्रत के दिन प्रातः काल स्नान करके विष्णु भगवान की मूर्ति स्थापित करें तथा संकल्प लेकर उनकी पूजा करें। भगवान विष्णु की पूजा तुलसी दल, पुष्प, जल, रोली, अक्षत तिल आदि सामग्री से की जाती है। **पूजा के बाद नारायण स्त्रोत एवं विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करने से विष्णु भगवान प्रसन्न होते हैं।** कुछ स्थानों पर भगवान श्री हरी के साथ लक्ष्मी जी की पूजा भी की जाती है। पूजा के बाद हरे कृष्ण महामंत्र का जाप करें।

- रुचि गोस्वामी जी

सुवंदनः जया एकादशी

माघ शुक्ल एकादशी
जया एकादशी कहलाये,
जप-उपवास हरि की पूजा
भय अधम योनियों का मिटाये,
गंधर्व युगल से हुई भूल-चूक
मिला श्राप पिशाच योनी पायी,
जया एकादशी का व्रत कर
युगल ने मुक्ति पायी।

- माणकचन्द सुथार जी

बूझो तो जानें?

1

न ही मैं खाता हूँ
न ही मैं पीता हूँ,
फिर भी सबके घरों की,
मैं रखवाली करता हूँ।

2

सिर पर उसके देखा मटका,
मटके को घर लाकर पटका,
कुछ को खाया कुछ को फेंका,
मटके का पानी भी गटका।

3

पंखों के बगैर उडता है, मगर हवाई जहाज नही
पूरे दिन सैर करता है, परन्तु थकता नही।

4

दो सुन्दर लडके, दोनों ही बन्धते,
एक भी बिछुड जाये तो काम ना आते।

5

टोपी है हरी मेरी, लाल है शरीर,
पेट में अजीब लगे, बीजों का यह सरूर।

पहेलियों के जवाब हमें वॉटसएप पर और फेसबुक पर भेज सकते है।

लघुकथा - देसी बीज

तुमने बताया नहीं घनश्याम, कि मैं क्या करूं?

"क्या सारे बिंड़ा (टंकियां) तुड़वा दूं और यह सारा बीज खत्म कर दूँ?"

एक बार फिर अपना सवाल लेकर चाचा मेरे सिर पर सवार थे। मैंने उन्हें फिर समझाया, "देखो चाचा हम गांव वाले हैं, जब खेत में बीज बोते हैं तो यह ठीक से जानना चाहते हैं कि हमारी जमीन के हिसाब से बीज मुफीद पड़ेगा या नहीं।“

चाचा बोले - वही तो मैं कह रहा हूं !
"पिछले पाँच साल से मेरा बीज अपनी टंकियों में रखा सड़ रहा है और पूरा गांव बाजार से नई - नई कंपनियों के जाने कैसे - कैसे बीज लेकर आ जाता है, जिसका फल भुगत भी रहे हैं, कई खेतों में तो बंजर जैसी हालत हो गयी है। विदेशी जमीन के बीज हमारे खेतों में पनप ही नहीं पा रहे हैं।"

"विदेशी बीज इतनी तरह के कहाँ होंगे?"

"हां वही तो मैं कह रहा हूं, मैंने धान के बीज दस तरह के, गेहूं पाँच तरह के, ज्वार तीन तरह की और चना के तो आठ तरह का बीज संभाल कर रखा हुआ है, लेकिन अब लगता है, मुझे खत्म ही करना पड़ेगा।"

हालांकि मेरे मन में यही उत्तर आया था कि "हां चाचा अब इन देशी बीजों का और अलग-अलग तरह प्रजाति के बीजों का हमारे

किसानों को कोई महत्व नहीं रह गया है, वह तो विदेशी कंपनी का बीज लाकर खेतों में फेंक देता है फिर विदेशी ही खाद उन पर डालता है, चाहे हमारे खेतों में वह विदेशी चीजें काम करें या ना करें लेकिन वह देसी बीज नहीं लेता है।" फिर भी मैंने चाचा का मन समझाते हुए कहा "देखो चाचा आशा से आसमान टिका है, इस साल और आजमा लेते हैं अगर बीज ठिकाने लग गया, तो अच्छी बात है नहीं तो टंकी तोड़ कर सारा बीज बाजार में बेच देना!"

मेरी बात पूरी भी नहीं हुई थी कि गांव के पटेल सुल्तान सिंह हमारी बैठक में दाखिल हुए। मेरी बात सुनते सुनते वे बोले **"अरे क्यों बेच देना, इसी साल बीज चाहिए गांव भर को।** अभी चौपाल पर सब लोग यही बात कर रहे थे। इस समय लॉकडाउन लगा है तो कोई कहीं नहीं जा रहा, अब यहां कंपनी के बीज कहां से आएंगे? सो हर साल आपके ही बीज लेंगे सब लोग और यह आप पर कोई एहसान नहीं है, बल्कि बरसों से आजमाए बीज बो कर हम **अगली पीढ़ी के लिए अपने परम्परागत बीजों की रखवाली कर रहे!"**

पटेल साहब की बात सुनकर चाचा बहुत खुश हुए वे अपने मकान के पीछे के खोड़ा में चले गए और वहां रखी एक एक टंकी पर ऐसे हाथ फेरने लगे मानो कोई पिता अपने बच्चों को दुलार रहा हो।

- राज बोहरे जी

पुष्पांजलि के नवीनतम अंक के अवलोकनार्थ क्लिक करें

देश की पहली साहित्यिक ई-पत्रिका जो पढ़ी और सुनी भी जा सकती है तथा जिसमें संगीत के लिंक्स भी है जिनसे निर्मल आनंद उठाया जा सकता है।

मूल्य : मात्र आपकी मुस्कान

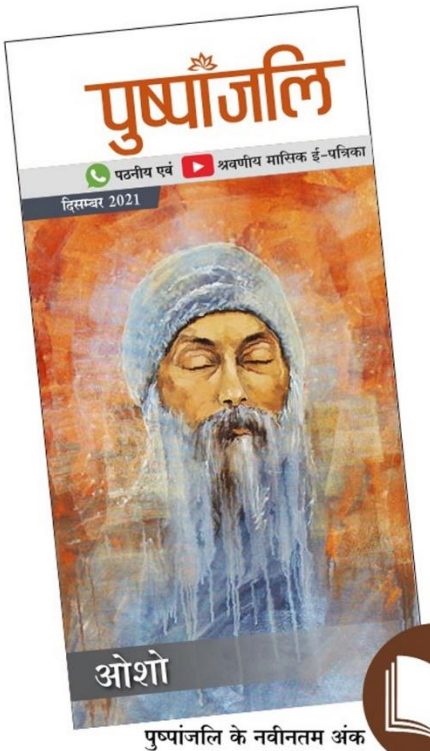

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका सन्देश स्वचलित रूप से हमें पहुँच जाएगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नं. पंजीकृत हो जाएगा।

8610502230 (केवल संदेश हेतु)
(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

लघुकथा - समर्पण

"स्वधा आज स्वयं को परीलोक से उतरी किसी अप्सरा से कम नहीं आंक रही थी, आज कॉलेज में आकर्षण का केंद्र वहीं थी, और पता है दीदी श्रीधर ने आज उसे पूरे सौ गुलाब दिये और कितने ही आकर्षक तोहफे भी और एक उस राहुल को देखो जिसने कहाँ माफ़ करना मीनू आज तो एक गुलाब भी नहीं मिला मैं पहुंचा तब तक सारे ख़त्म हो गए थे, मेरी सभी सहेलियां मुझ पर इतना हंस रहीं थी रूंआसी होती मीनू बोले जा रही थी।"

हाहाहाहाहा, दीदी अपनी हंसी पर काबू न कर पायी और कहने लगी मीनू तुझे जलन हो रही है क्या? नहीं दीदी पर स्वधा अपने वैलेंटाइन डे के गिफ्ट को लेकर पूरे सहेलियों के बीच चर्चा का विषय थी और एक मैं उपहास का पात्र।"

अरे पगली, **केवल वैलेंटाइन डे पर गुलाब भेंट देकर आय लव यू कहने से प्रेम की पुष्टि नहीं होती यह तो मात्र दिखावा और आडंबर है। एक दिन गुलाब लेने देने से प्रेम की गहराई को नापा नहीं जा सकता मीनू यह तो अनंत और असीमित भाव है जो महसूस किये जा सकते है यह किसी दिन के मोहताज नहीं होते।** तुम शायद भूल गई पर तुमने ही तो बताया था गतवर्ष इसी श्रीधर ने मयुरी को गुलाब दिये थे। मीनू यह श्रीधर के लिए प्रेम क्या लिबास की तरह है जो बदलते रहता है .., और तुम्हारी वह स्वधा कितनो से तोहफे लेती है...?

दीदी की बातें सुन मीनू भी हंसने लगी और राहुल को लेकर आश्वस्त हुई, उसे गुमसुम देख दीदी बोली, चल जरा घूम आते है आज वैलेंटाइन डे पर हर सड़क, हर गली-मोहल्ले में प्यार के परिंदे फड़फड़ाते नजर आयेंगे जरा बाहरी दुनिया का नजारा देख आते है। माँ के बाद दीदी ही मीनू की सब कुछ थी। दोनों बहनें निकली अचानक न जाने

कैसे लिफ्ट का दरवाजा बंद हुआ और देखते ही देखते मीनू की तीन उंगलियां कट गई खून की धारा बहने लगी, मीनू के जीजाजी भी ऑफिस के काम से शहर से बाहर गये हुए थे, दीदी पड़ोसियों की मदद से जैसे तैसे अस्पताल पहुंचे डॉक्टर ने इमरजेंसी ऑपरेशन का कहा, हिम्मत जुटाकर दीदी ने राहुल को फोन किया कुछ ही देर में राहुल अस्पताल पहुंचा और सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। ऑपरेशन तो हो गया पर डॉक्टर ने उस हाथ से किसी भी तरह का काम करने के लिए मीनू को मना कर दिया ऐसे गंभीर हालात में राहुल की जगह कोई और होता तो शायद मुँह फेर लेता पर राहुल अपने निर्णय पर अडिग था मीनू ने कहा भी सोचकर निर्णय लेना राहुल...।

वह मुस्कुराकर रह गया निर्णय तो हम बहुत पहले ही ले चुके है मीनू बस इंतजार था प्लेसमेंट का आज वह इंतजार भी पूरा हुआ, मीनू यह खुशखबरी सुन अपना दर्द भूल गई, सच्चा हमसफर पाकर मीनू की कमजोर उंगलियों में जैसे पुनः बल संचारित हो गया और प्रेम की गहराई में वह डूब गई थी राहुल का उसके प्रति **समर्पित भाव देखकर गुलाब भी मुस्कुराने लगा** और स्वयं को कमतर आंकने लगा।

- राजश्री राठी जी

आज का वैलेंटाइन अपने दिल के नाम,

चेहरे पर बनाये रखे प्यारी सी मुस्कान,

कदमों से कदम को रखिये चलायमान,

जुदा ना करे खुद से कभी स्वंय का बचपन,

धड़कने दे दिल को और रखिये उसे हमेशा जवान।

हार्दिक आभार

भारतीय परम्परा

की मासिक ई-पत्रिका
के पुराने अंकों को देखने के लिए
आइकन पर स्पर्श करें

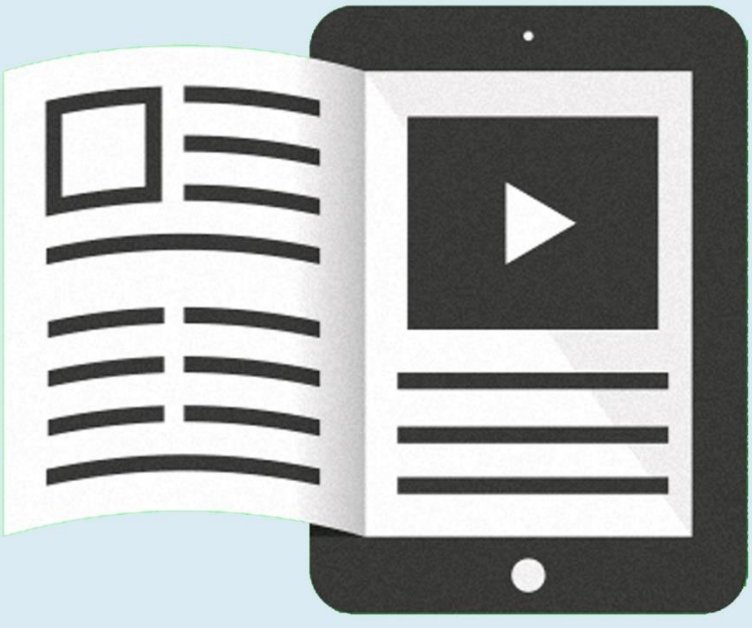

www.bhartiyaparampara.com